



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 169]
No. 169]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार 8 मई, 2008/वैशाख 18, 1930
NEW DELHI, THURSDAY, MAY 8, 2008/VAISAKHA 18, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 मई, 2008

(मध्यावधि समीक्षा)

विषय:- चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सैक्रीन के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क के संबंध में मध्यावधि समीक्षा की शुरुआत करना ।

सं. 15/15/2008-डीजीएडी - यतः वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 (जिसे एतदपश्चात पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है), ने चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सैक्रीन (जिसे एतदपश्चात संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए दिनांक 3 जनवरी, 2007 की अधिसूचना सं. 14/27/2004-डीजीएडी के तहत अपने अंतिम परिणाम अधिसूचित किए थे ।

और यतः संबद्ध वस्तुओं पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क दिनांक 19.03.2007 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 41/2007-सीमाशुल्क के अंतर्गत लागू किया गया था ।

2. विचाराधीन उत्पाद

मूल जाँच तथा मौजूदा समीक्षा में शामिल उत्पाद सैक्रीन है। सैक्रीन अपोषक मधुरक है और इसे गन्ने से बनने वाली चीनी का कम कैलोरी युक्त विकल्प माना जाता है। सैक्रीन मुख्यतः दो रूपों में उत्पादित होता है अर्थात् विलेय और अविलेय सैक्रीन। बाजार की भाषा शैली में विलेय सैक्रीन सोडियम सैक्रीन कहलाती है जबकि अविलेय सैक्रीन अविलेय सोडियम सैक्रीन कहलाती है। सोडियम सैक्रीन के अलावा सैक्रीन की कैल्शियम तथा जिक सैक्रीन जैसी अन्य किरमें भी हो सकती हैं। सैक्रीन का दो भौतिक रूपों में उत्पादन होता है अर्थात् दानेदार और चूर्ण। दानेदार सोडियम सैक्रीन का उपयोग उस स्थिति में होता है जहाँ सैक्रीन को घोला जाता है। चूर्ण रूप, जो पीस कर स्प्रे ड्राई किया जाता है, का प्रयोग शुष्क मिश्रणों तथा भेषजों में किया जाता है। सैक्रीन के अविलेय रूप का प्रयोग अनेक भेषजीय तथा औषधीय अनुप्रयोगों में किया जाता है। यह पानी में थोड़ा विलेय होता है। सैक्रीन चीनी से 500 गुना अधिक मीठा होता है। सैक्रीन के सभी रूप मौजूदा जाँच क्षेत्र में शामिल हैं।

इसका प्रयोग खाद्य तथा पेय, स्वलाभकारी उत्पाद, टेबल-टॉप स्वीटनर्स, इलेक्ट्रोप्लेटिंग ब्राइटनर्स, भेषज आदि जैसे अनेक उद्योगों में किया जाता है। यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के उपशीर्ष 29251100 के अंतर्गत वर्गीकृत है। आवेदक ने कहा है कि संबद्ध उत्पाद ऊपर उल्लिखित उप-शीर्ष के अंतर्गत आयात किए जा रहे हैं। तथापि सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और जाँच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

3. जाँच शुरूआत

सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम 1995 तथा उसके तहत बनाई गई पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की आवश्यकता की समय-समय पर समीक्षा की जानी अपेक्षित है। उपरोक्त उपबंध के अनुसार संबद्ध वस्तु के एक घरेलू उत्पादक, मै0 विष्णु कैमिकल्स लि0, 6-3662/बी/ए, फ्लैट सं.1, सुवर्ण हाउस, संगीत नगर कॉलोनी, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद-5000082 ने चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लागू पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा किए जाने की आवश्यकता जताते हुए एक याचिका दायर की है। निर्दिष्ट प्राधिकारी का विचार है कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के उपबंध तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम, 1995 की धारा 9क(5) के अंतर्गत इस स्थिति में संस्तुत पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा करना उचित होगा।

4. शामिल देश

मौजूदा जाँच में शामिल देश चीन जन.गण. है।

5. समीक्षा के आधार

आवेदक ने दावा किया है कि पाटन की परिस्थितियों में काफी बदलाव आया है जिसके कारण लागू पाटनरोधी उपाय की समीक्षा अपेक्षित है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 3 जनवरी, 2007 के अपने अंतिम परिणामों के तहत चीन जन.गण. से सैक्रीन के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी। आवेदक ने दावा किया है कि अंतिम परिणामों में निर्धारित मौजूदा

शुल्क को जारी किए जाने के बाद से ओ टी एस, जो एक प्रमुख कच्चा माल है, की कीमत अत्यधिक बढ़ने के साथ-साथ विनिमय दर में भी काफी बदलाव आए हैं। अतः मध्यावधि समीक्षा आवश्यक है। आवेदक ने मध्यावधि समीक्षा की आवश्यकता को उचित ठहराते हुए प्रथम दृष्ट्या पर्याप्त सकारात्मक प्रमाण प्रस्तुत किया है।

6. प्रक्रिया

आवेदक द्वारा प्रदान की गई सूचना, जो बदली हुई परिस्थितियों को दर्शाते हुए लागू उपाय की समीक्षा की आवश्यकता लक्षित करती है, को ध्यान में रखते हुए अब निर्दिष्ट प्राधिकारी का विचार है कि उपरोक्त नियम 23 के साथ पठित सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम 1995 की धारा 9 क (5) के उपबंधों के अनुसार परिवर्तित परिस्थितियों के मद्देनजर दिनांक 3 जनवरी, 2007 की अधिसूचना सं० 14/27/2004 के अंतर्गत अधिसूचित अंतिम परिणामों तथा दिनांक 19.03.2007 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं० 41/2007 के तहत लागू निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा करना उचित है। समीक्षा में दिनांक 4 जुलाई, 2005 की अधिसूचना सं० 14/27/2004 के सभी पहलू शामिल हैं।

7. जांच की अवधि

वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 अक्टूबर, 2006 से 30 सितम्बर, 2007 (12 महीने) तक की है। तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2004-2005, 2005-2006 तथा 2006-2007 शामिल होंगे।

8. सूचना प्रस्तुत करना

संबद्ध देश के निर्यातकों, भारत में उसके दूतावासों/उच्चायोगों के जरिए उनकी सरकार/प्रतिनिधियों, भारत में संबंधित समझे जाने वाले भारत के आयातकों और प्रयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से संगत सूचना प्रस्तुत करने के लिए और निम्नलिखित को अपने विचारों से अवगत कराने के लिए अलग से लिखा जा रहा है:-

निर्दिष्ट प्राधिकारी
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय
कमरा सं० 240, उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011

कोई अन्य हितबद्ध पक्ष भी जाँच से संबंधित सूचनाएँ निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से नीचे दी गई समय-सीमा के भीतर प्रस्तुत कर सकता है।

9. समय-सीमा

वर्तमान समीक्षा से संबंधित कोई भी सूचना तथा सुनवाई के लिए कोई भी अनुरोध प्राधिकारी के पास उपर्युक्त पते पर इस समीक्षा अधिसूचना के पत्र की तारीख से चालीस (40)

दिनों के भीतर पहुँच जाने चाहिए। यदि निर्धारित समय-सीमा के भीतर कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है अथवा प्राप्त सूचना अपूर्ण है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उपर्युक्त नियमों के अनुसार रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर अपने जाँच परिणाम दर्ज कर सकते हैं।

10. सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण

नियम 6(7) के अनुसार कोई भी हितबद्ध पक्ष उस सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकता है जिसमें अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश रखे हुए हैं। यदि कोई हितबद्ध पक्ष आवश्यक सूचना जुटाने से मना करता है अथवा उचित अवधि के भीतर उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराता है अथवा जाँच में अत्यधिक बाधा डालता है तो प्राधिकारी अपने पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जाँच परिणाम दर्ज कर सकते हैं और केन्द्र सरकार को यथोचित सिफारिशें कर सकते हैं।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

INITIATION NOTIFICATION

New Delhi, the 7th May, 2008

(Mid-Term Review)

Subject: Initiation of Mid-term Review regarding anti-dumping duty imposed on imports of Saccharin originating in or exported from China PR.

No. 15/15/2008-DGAD.—Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred to as AD Rules), the Designated Authority (herein after referred to as the Authority) notified its final findings vide Notification No. 14/27/2004-DGAD dated 3rd January, 2007 recommending definitive antidumping duty on import of Saccharin (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as subject country)

And whereas definitive antidumping duty was imposed on the subject goods vide Customs Notification No. 41/2007-Customs, dated 19.03.2007.

2. Product Under Consideration

The product involved in the original investigation and this current review is Saccharin. Saccharin is a non-nutritive sweetener and considered to be low calorie substitute for cane sugar. Saccharin is primarily produced in two types i.e. soluble and insoluble saccharin. In market parlance soluble saccharin is called sodium saccharin whereas insoluble sodium saccharin is called insoluble saccharin. Apart from sodium saccharin, saccharin can have other variants such as calcium and zinc Saccharin. Saccharin is produced in two physical forms, viz. Granular and powder. Sodium saccharin in granular form is used in situation where saccharin will be dissolved, the

powder form which have been grounded and spray dried is used in dry mixes and pharmaceuticals. Insoluble form of saccharin is used in many pharmaceutical and medical applications. It is slightly soluble in water. Saccharin is more than 500 times sweeter than sugar. All forms of saccharin are within the scope of the present investigations.

It is used in variety of industries such as food and beverage, personal care products, table-top sweeteners, electroplating brighteners, pharmaceuticals, etc. It is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under sub-headings 29251100. The applicant has stated that subject goods are being imported under above mentioned sub-headings. However, the Custom classification is indicative only and not binding on the scope of investigation.

3. Initiation

The Customs Tariff (Amendment) Act 1995 and the AD Rules made there under require the Authority to review from time to time the need for continuance of anti-dumping duty. In terms of the above provision one of the domestic producer of the subject goods M/s. Vishnu chemicals Ltd., 6-3662/B/A, Flat No.1 Suvarna House, Sangeet Nagar Colony, Somajiguda, Hyderabad-500082 have filed an application substantiating the need for Mid Term Review of the anti-dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from China PR. The Designated Authority considers that the Mid Term Review of the Anti Dumping Duty recommended would be appropriate at this stage under the provision of rule 23 of AD Rules and section 9A (5) of the Customs Tariff (Amendment) Act, 1995 as amended.

4. Countries Involved

The country involved in the present investigation is China PR.

5. Grounds for Review

The applicant has claimed that the conditions of dumping have changed substantially requiring a review of the anti-dumping measure in force. The Designated Authority had recommended anti dumping duty on imports of Saccharin from China PR vide its final finding dated 3rd January, 2007. The applicant has claimed that the price of OTS a major raw material has significantly increased as well as exchange rate also have significant variation since the imposition of existing duty determined in the Final Findings, Mid Term Review is attracted. The applicant has prima facie filed the sufficient positive evidence justifying the need for Mid Term Review.

6. Procedure

Having regard to the information provided by the applicant indicating changed circumstances necessitating a review of the measure in force, the Designated Authority now considers that a Mid Term Review of the Final Findings notified vide No. 14/27/2004-DGAD dated 3rd January, 2007 and the definitive Anti Dumping Duty imposed vide Customs Notification No.41/2007 dated 19.03.2007 is appropriate in view of the changed circumstances, in terms of the provisions of Section 9A (5) of Customs Tariff (Amendment) Act 1995 read with Rule 23 supra. The review covers all aspects of Notification No. 14/27/2004-DGAD dated 4th July, 2005.

7. Period of Investigation

The period of investigation for the purpose of the present review is 1st October, 2006 to 30th September, 2007 (12 months). However, injury analysis shall cover the years 2004-2005, 2005-2006 and 2006- 2007.

8. Submission of Information

The exporters in subject countries, their government through their Embassies/High Commissions in India/representatives, the importers and users in India known to be concerned and the domestic industry are being addressed separately to submit relevant information in the form and manner prescribed and to make their views known to the:

The Designated Authority,
Ministry of Commerce & Industry,
Department of Commerce,
Directorate General of Anti-Dumping & Allied Duties, (DGAD),
Room No. 240, Udyog Bhavan,
New Delhi-110011

Any other interested party may also make its submissions relevant to the investigation in the prescribed form and manner within the time limit set out below.

9. Time Limit

Any information relating to the present review and any request for hearing should be sent in writing so as to reach the Authority at the address mentioned above not later than forty days (40 Days) from the date of letter of this review notification. If no information is received within the prescribed time limit or the information received is incomplete, the Designated Authority may record its findings on the basis of the facts available on record in accordance with the AD Rules.

10. Inspection of Public File

In terms of Rules 6(7), any interested party may inspect the public file containing non-confidential version of the evidence submitted by other interested parties. In case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Government as deemed fit.

R. GOPALAN, Designated Authority